Teacher Training College
B.Ed - IInd year
Sub - Guidance & Counselling

Model of Guidance
निर्देशन के प्रतिमान

"शिक्षण प्रतिमान अनुदेशन की रूपरेखा माने जाते हैं। इसके अन्तर्गत विशेष उद्देश्य प्राप्ति के लिये विशिष्ट परिस्थितियों का उल्लेख किया जाता है, जिसमें छात्र व शिक्षक की अन्तः प्रक्रिया इस प्रकार की हो कि उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सके।

शिक्षण प्रतिमान तथा शिक्षण आव्यूह दोनों एक ही कार्य करते हैं। दोनों ही शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये विशिष्ट शैक्षिक वातावरण उत्पन्न करते हैं, परन्तु कोई भी शिक्षण आव्यूह सहायक प्रणाली को विकसित नहीं करती है। शिक्षण के लिये परीक्षण आवश्यक क्रिया मानी जाती है। बिना परीक्षण के शिक्षण प्रक्रिया अधूरी रहती है। शिक्षण प्रतिमान की सहायक प्रणाली महत्वपूर्ण होती है। इस प्रकार शिक्षण प्रतिमान परीक्षण को भी समान महत्व देते हैं। और मूल्यांकन प्रणाली को भी विकसित करते हैं। शिक्षण प्रतिमान शिक्षण आव्यूह रचना की अपेक्षा अधिक व्यापक होते हैं।

→ शिक्षण प्रतिमान में शिक्षण की विशिष्ट रूपरेखा का विवरण होता है।

i) निर्देशन की निष्पत्तियों को व्यवहारिक रूप देना।
ii) समुचित उद्दीपन की परिस्थितियों का चयन करना, जिससे छात्र अपेक्षित अनुक्रिया कर सकें तथा सहायता प्रदान कर सकें।
iii) उन परिस्थितियों का विशिष्टीकरण करना जिनमें छात्रों की अनुक्रियाओं को देख सकें।

Phone/Email/Notes
Notes
JANUARY

M	30	2	9	16	23
T	31	3	10	17	24
W		4	11	18	25
T		5	12	19	26
F		6	13	20	27
S		7	14	21	28
S	1	8	15	22	29

Scanned with CamScanner

निर्देशन प्रतिमान के आधारभूत तत्व

एक प्रतिमान के साधारणत: चार मूल तत्व होते हैं;

i) उद्देश्य (focus)
ii) संरचना (Syntax)
iii) सामाजिक प्रणाली (Social System)
iv) सहायक प्रणाली (Support ")

i) उद्देश्य (focus) उद्देश्य से तात्पर्य उस बिन्दु से है जिसके लिये प्रतिमान विकसित किया जाता है, शिक्षण के लक्ष्य तथा उद्देश्य ही शिक्षण प्रतिमान के उद्देश्य को निर्धारित करते हैं। शिक्षण प्रतिमान का उद्देश्य ही केन्द्र बिन्दु माना जाता है।

2) संरचना :- निर्देशन प्रतिमान की संरचना में शिक्षण सोपान की व्याख्या की जाती है। इसके अन्तर्गत निर्देशन क्रियाओं एवं प्रक्रियाओं की व्यवस्था का क्रम निर्धारित किया जाता है। निर्देशन की क्रियाओं की व्यवस्था इस प्रकार की जाती है जिससे सीखने की ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न की जा सकें, जिनसे उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके। छात्रों तथा शिक्षक की अन्त: क्रिया के स्वरूप को क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित किया जाता है।

3) सामाजिक प्रणाली :- निर्देशन एक सामाजिक प्रक्रिया है, इसलिए छात्र और शिक्षक की क्रियाओं और उनके आपसी सम्बन्धों का निर्धारण इस सोपान में किया जाता है। छात्रों को अभिप्रेरणा देने की प्रविधियों पर भी विचार किया जाता है। निर्देशन को प्रभावशाली बनाने में सामाजिक प्रणाली का विशेष महत्व होता है।

Phone/Email/Notes

Notes

DECEMBER

M		5	12	19	26
T		6	13	20	27
W		7	14	21	28
T	1	8	15	22	29
F	2	9	16	23	30
S	3	10	17	24	31
S	4	11	18	25	

Scanned with CamScanner

4. सहायक प्रणाली :- निर्देशन के प्रतिमान का अन्तिम सोपान अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है इसमें शिक्षण की सफलता के सम्बन्ध में निर्णय लिया जाता है कि उद्देश्यों की प्राप्ति हो सकी अथवा नहीं। इसके आधार पर प्रमुख की निर्देशन व्यूह तथा युक्तियों की प्रभावशीलता का पता चलता है और इनमें सुधार एवं परिवर्तन किया जा सकता है। प्रत्येक प्रतिमान का उद्देश्य भिन्न होता है इसलिए सहायक प्रणाली भी भिन्न होती है।

निर्देशन प्रतिमानों की अवधारणाएँ

i) शिक्षण एक वातावरण उत्पन्न करने का साधन है जो स्वतंत्र अवयवों को सम्मिलित करता है।

ii) पाठ्यवस्तु तथा कौशल अनुदेशन का कार्य करती है, जिसके द्वारा छात्रों तथा शिक्षक के मध्य अन्तः क्रिया होती है।

iii) निर्देशन के तत्वों की व्यवस्था विभिन्न प्रकार से की जा सकती है, जिससे विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है।

iv) निर्देशन प्रतिमान वास्तव में वातावरण उत्पन्न करने के प्रतिमान हैं जो सीखने के अनुभवों के लिए वास्तविक तथा व्यवहारिक रूपरेखा प्रदान करते हैं।

Phone/Email/Notes
Notes
JANUARY
M 30 2 9 16 23
T 31 3 10 17 24
W 4 11 18 25
T 5 12 19 26
F 6 13 20 27
S 7 14 21 28
S 1 8 15 22 29

Scanned with CamScanner

निर्देशन प्रतिमान के प्रकार

निर्देशन के प्रतिमानों को मुख्य रूप से तीन वर्गों में विभाजित किया गया है, इनके अन्तर्गत निहित प्रतिमानों को दिया गया है।

1) निर्देशन के प्रारम्भिक प्रतिमान
   अ) पार्सन का निर्देशन प्रतिमान
   ब) ब्रीवर का निर्देशन प्रतिमान

2) निर्देशन के कालान्तर प्रतिमान
   अ) जोन्स तथा मायर्स का निर्देशन प्रतिमान
   ब) प्राक्टर का निर्देशन प्रतिमान
   स) कुहरेस का निर्देशन प्रतिमान
   द) स्ट्रैंग का निर्देशन प्रतिमान

3) निर्देशन के तत्कालीन प्रतिमान
   अ) मैथ्यूसन का निर्देशन प्रतिमान
   ब) शोबेन का निर्देशन प्रतिमान
   स) लिटिल एवं चैपमैन का निर्देशन प्रतिमान
   द) हायट का निर्देशन प्रतिमान

निर्देशन के प्रारम्भिक काल में निर्देशन के प्रतिमान केवल मानसिक विकास के क्षेत्र तक ही सीमित रहे और निर्देशन कार्यक्रमों का मुख्य लक्ष्य व्यवसाय का चयन करना तथा छात्र का व्यावसायिक विकास ही रहा है। सामाजिक पुनर्निर्माण के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण आह्वान के रूप में माना है और शिक्षा एवं विद्यालयों की सामाजिक भूमिका को निर्देशन अभ्यास का आवश्यक अंग स्वीकार किया है।

Phone/Email/Notes
Notes
DECEMBER
M 5 12 19 26
T 6 13 20 27
W 7 14 21 28
T 1 8 15 22 29
F 2 9 16 23 30
S 3 10 17 24 31
S 4 11 18 25

Scanned with CamScanner

सामूहिक निर्देशन

"शिक्षा का आधार अनुभव है तथा अनुभव सामाजिक प्रतिष्ठ से प्राप्त होते हैं। शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है, जो परिवार, कक्षा, क्लब या ऐसे ही स्थायी या अस्थायी समूहों में चलती रहती है। इसलिए शिक्षा एक सामूहिक अनुभव का ही रूप है, और सामूहिक अनुभव शैक्षिक होते हैं।"

सामूहिक निर्देशन की परिभाषा :

According to शॉवर हारपोक → सामूहिक निर्देशन वह कोई भी सामूहिक क्रिया है जो कुछ निर्देशन कार्यक्रम को सुविधा देने या सुधार करने के लिए सम्पन्न की जाती है।

जेन वार्स्स के अनुसार → "सामाजिक निर्देशन को आधारभूततया इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि यह सामूहिक अनुभवों का व्यक्ति के उत्तम विकास में सहायता देने एवं वांछित उद्देश्य की प्राप्ति हेतु चेतना पूर्ण प्रयोग है।

Sunday 29

जोन्स डाउनिंग → सामूहिक निर्देशन निर्देशन सेवा का वह अंग है जो एक कुशल परामर्शदाता के निर्देशन में नवयुवक को अन्यों के साथ विचार-विनिमय एवं अनुभवों में आदान-प्रदान का अवसर प्रदान करता है। यह एक ऐसा अवसर प्रदान करता है। जिनमें अन्तर्दृष्टि विकसित होती है, आलोचना की शक्ति मिलती है, परिपक्वता में वृद्धि होती है, कार्य करने के लिए तर्कसंगत निर्णय लिए जाते हैं। इसमें ऐसा वातावरण मिलता है। जिससे मनोचिकित्सक से लाभ प्राप्त किये जाते हैं।

Notes

JANUARY

M	30	2	9	16	23
T	31	3	10	17	24
W		4	11	18	25
T		5	12	19	26
F		6	13	20	27
S		7	14	21	28
S	1	8	15	22	29

Scanned with CamScanner

और आमन्त्रिक कुशलता का विकास होता है। सामूहिक निर्देशन का अन्तिम लक्ष्य व्यक्तिगत विकास ही है।

डनिंग के अनुसार → सामूहिक निर्देशन संगठित निर्देशन कार्यक्रम का ही एक अंग है। जिसमें क्रियाएं सम्पादित की जाती हैं। संगठित निर्देशन कार्यक्रम अनेक छात्रों का परस्पर मिलन होता है, इसमें सूचनाएँ प्राप्त करते हैं विचारों का आदान-प्रदान होता है। भविष्य की योजना बनाते हैं, और निर्णय लेते हैं।

समूह के प्रकार (Kinds of Groups)

1) सूचना प्रदान करने वाले सत्र → छोटे समूहों में छात्रों को व्यवसाय या शिक्षा के बारे में सूचनाएँ देकर निर्देशन कार्य शीघ्र पूरा किया जा सकता है। सदस्य प्रश्नों के द्वारा अपने समस्त सन्देह दूर सकते हैं।

2) पाठ्य-योजना सत्र → समूहों में सदस्य एक दूसरे को पाठ्यक्रम तथा विद्यालय के क्रियाओं की योजना बनाने में सहायता प्रदान करते हैं

3) कालेज की योजना → दूसरे सदस्यों के विचार से सूचनाएं प्राप्त करके छात्र अपने भविष्य की योजना तैयार कर सकते हैं।

4) व्यावसायिक योजना सत्र - इस प्रकार के सत्र उन छात्रों के लिए होते हैं जो अध्ययन करते हुए अंशकालीन व्यवसाय की खोज में हैं या उनके लिए जो अध्ययन है समाप्ति पर हैं और किसी व्यवसाय में प्रवेश चाहते हैं

Scanned with CamScanner

सामूहिक निर्देशन की आवश्यकता

सामूहिक निर्देशन की आवश्यकता को प्रकट करने वाला यह है समान समस्याओं पर पृथक-पृथक विचार करने पर समय का अधिक अपव्यय होता है। अतः समय की बचत के लिए सामान्य समस्याओं पर एक समूह में विचार-विनिमय करना तर्कसंगत प्रतीत होता है। इसके साथ ही अधिकांश विद्यालयों में निर्देशन कर्मचारियों का अभाव है और दूसरा विद्यालयों में छात्रों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है। अतः निर्देशन कार्यकर्ताओं के लिए यह असम्भव हो जाता है कि सभी समस्याओं पर व्यक्तिगत अध्ययन करके अपने उपयोगी सुझाव दे सके। देश में भी प्रशिक्षित कर्मचारियों के अभाव तथा परामर्श प्राप्त करने वाले व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि को देखकर सामूहिक निर्देशन की विधियों का प्रयोग में लाने की सलाह दी है। कुछ निश्चित क्रियाओं के लिए सामूहिक कार्य स्वाभाविक रूप से उपयुक्त है। मुख्यतः ऐसी क्रियाएँ शिक्षण-कार्य से मिलती-जुलती होती हैं उदाहरण के लिए नवीन व्यवसायों के बारे में सूचनाएँ देना या नवीन छात्रों को विद्यालय की कार्य-प्रणाली का परिचय कराने के लिए सामूहिक कार्य-विधि अधिक उपयुक्त प्रतीत होती है। समूह में छात्रों को भावात्मक अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त होता है। जिसके कारण मानसिक तनाव एवं भावात्मक आघात में कमी आती है। कुछ छात्रों में जो असमायोजन के लक्षण होते हैं। सामूहिक कार्य-विधि द्वारा सामाजिक क्षमता का विकास होता है। समूह छात्रों की अभिवृत्तियों को प्रभावित करता है।

Phone/Email/Notes
Notes
JANUARY
M 30 2 9 16 23
T 31 3 10 17 24
W 4 11 18 25
T 5 12 19 26
F 6 13 20 27
S 7 14 21 28
S 1 8 15 22 29
Scanned with CamScanner

सामूहिक निर्देशन के उद्देश्य –

1) आत्म-विश्वास का विकास
2) अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता वाले छात्रों का सा
3) सामाजिक कुशलता का विकास
4) अधिकांश छात्रों के साथ परामर्शदाता का सम्पर्क।
5) छात्रों की चिन्ताओं एवं तनावों में कमी।
6) परामर्शदाता की कुशलता में वृद्धि
7) विविध शैक्षिक अनुभवों को समन्वित करने के लिए
8) व्यक्तिगत परामर्श की तत्परता की तैयारी
1) अभिविन्यास 2) सीखने के अनुभवों की व्यवस्था
3) व्यक्तिगत परामर्श की पृष्ठभूमि
4) समायोजन एवं चिकित्सा

Phone/Email/Notes
Notes

FEBRUARY

M		6	13	20	27
T		7	14	21	28
W	1	8	15	22	
T	2	9	16	23	
F	3	10	17	24	

Scanned with CamScanner

Notes

कुछ छात्र अधिक भावुक होते हैं साथियों द्वारा की गई छोटी-छोटी बातों पर शीघ्र ही मानसिक सन्तुलन खो बैठते हैं। समूह ऐसे छात्रों को अपने मनोभावों पर नियन्त्रण रखने एवं उनको सन्तुलित रखने में पूर्ण सहयोग देते हैं। सामूहिक परिस्थितियाँ छात्रों के व्यक्तित्व के विकास में अपना योगदान देती हैं। ऐसी क्रियायें शिक्षण कार्य से मिलती-जुलती होती हैं। उदाहरण के लिए: नवीन व्यवस्थाओं के बारे में सूचनाएँ देना या नवीन छात्रों को विद्यालयों की कार्य प्रणाली का परिचय कराने के लिए सामूहिक कार्य विधि अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

व्यक्तिगत परामर्श के लिए उचित पृष्ठभूमि तैयार करता है, क्योंकि सामूहिक प्रक्रिया के माध्यम से छात्र एवं परामर्शदाता के मध्य घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो सकता है और उसकी सूझ को तीव्र किया जा सकता है। सर्वप्रथम समूह में मिलने पर छात्र परामर्शदाता के स्वभाव से परिचित हो जाते हैं। और फिर उनको उसके निकट व्यक्तिगत परामर्श के लिए जाने में कोई संकोच नहीं होता है। सामान्यतः वार्ता मित्रतापूर्ण वातावरण में सम्पन्न हो सकती है। निर्देशन की सुविधा की दृष्टि से भारत एक पिछड़ा देश रहा है। यहाँ पर एक ओर तो सभी विद्यालयों में निर्देशन सेवाओं की व्यवस्था नहीं है और दूसरी ओर जिनमें यह सेवा उपलब्ध भी है, वहाँ बहुत ही सीमित रूप में है। यहाँ सामूहिक निर्देशन प्रविधि का प्रयोग विस्तृत स्तर पर है।

Scanned with CamScanner